शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

# प्रेमचंद की प्रमुख कहानियों में ग्रामीण जनजीवन

मोनिका रितेश पटेल (शोधार्थी)
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

## शोध संक्षेप

*ग्रामीण जन-जीवन की कुछ विशेष खूबियाँ होती है। जैसे समुदाय का छोटा आकार, कृषि मुख्य व्यवसाय, संयुक्त परिवार धर्म एवं रूढि यों का महत्व, प्राथमिक संबंधों की प्रधानता, जाति-प्रथा की कठोरता, सरल एवं सहज जीवन, जजमानी प्रथा, अशिक्षा और भाग्यवादिता, अंधविश्वास रखना, स्त्रियों की निम्न दशा, कर्मठ जीवन शैली, लोकलाज की परवाह, सामाजिक दायित्वों मे कट्टरता, महाजनी प्रथा, मृत्युभोज आदि। ग्राम ही हमारे जीवन के आधार है। ग्रामों से ही शहरों की सभ्यताओं का विकास हुआ है। इस संबंध में भारत में पूर्व और फिर बाद की दोनों सामाजिक व्यवस्थाओं में शोध कार्य हुये हैं। साहित्यकारों ने इन्हीं सबका चित्रण अपने साहित्य में किया है इन साहित्यकारों में भी प्रेमचंद का अलग स्थान है। उन्होंने भारतीय ग्राम्य जीवन के जैसे चित्र उकेरे हैं, वैसी सफलता अन्य को नहीं मिल पाई है। प्रस्तुत शोध पत्र में प्रेमचंद की प्रमुख कहानियों में ग्रामीण जीवन का अवलोकन किया गया है*

## भूमिका

प्रेमचंद कथा साहित्य के सर्वोपरि स्तम्भ है। इन्होंने साहित्य का ताना-बाना उपन्यास और कहानी के माध्यम से बुना है। इनके द्वारा अपने साहित्य का सृजन , समय, समाज और संवेदना द्वारा होता है तो ग्रामीण जीवन साहित्य से कैसे अनछुआ रह सकता है। हमारे ग्राम सामुदायिक भावनाओं से ओत-प्रोत हैं। किसान का जीवन प्रकृति पर आधारित है। प्रकृति से इनका सीधा संबंध है। सर्वप्रथम शब्द आता है 'ग्रामीण'। प्रेमचंद के समाज शास्त्रीय साहित्य की ग्रामीण समाजशास्त्र शाखा में ग्रामीण परिवेश का उल्लेख ग्रामीण समाज शास्त्र की प्रयोग शाला के रुप में हुआ है। ग्रामों की अवस्थाओं एवं ढाँचें के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद साहित्य में स्थायी एवं कृषि ग्रामों का विषेष रूप से टूटे- फूटे कुछ कच्चे घरों और खेत-खलिहानों के संदर्भ में वर्णन हुआ है। ख्यात समा जशास्त्री डॉ.सेण्डर्सन ने समुदाय को परिभाषित करते हुए कहा है , "एक ग्रामीण समुदाय ऐसा संघ है , जो एक स्थानीय क्षेत्र में जनता एवं उनकी संस्थाओं के बीच पाया जाता है। जिसमें वे बिखरे हुए खेतों की झोपड़ियों में एवं एक ग्राम में रहते है , जो प्रायः उनकी सामान्य गतिविधियों का केन्द्र होता है।"1

अमेरिका में 1890 से 1920 तक का काल ग्रामीण जीवन पर आधारित 'शोषक युग' के नाम से जाना जाता है। उस समय ग्राम में अत्यधिक समस्याएँ उत्पन्न हो गई थी। सन् 1911 के बाद इस संबंध में भारत में अध्ययन की प्रवृत्ति तीव्र होती गई। इस विषय मे श्री गुप्ता और शर्मा ने लिखा है, "ग्रामीण जीवन पर अनेक सर्वेक्षण एवं सम्मेलन हुए तथ्यों का संकलन किया गया और इस तरह से उस समय ग्रामीण जीवन आन्दोलन

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

चल पड़ा था एवं ग्रामों को भी अध्ययन का विषय बनाया गया।"2

प्रेमचंद की कहानियों में ग्रामीण जीवन

ग्रामीण जीवन जिन विभिन्न कार्यों से जुड़ा है , उनका वर्णन प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में किया है। ग्रामों में प्रातः काल बेला में चिड़ियों का चहचहाना, सूर्योदय का लालिमा लिए स्पष्ट रुप से दृष्टिगोचर होने वाला सुहावना दृष्य मन को मोहन वाला होता है। 'आत्माराम' कहानी में प्रातः काल का वर्णन करते हुए प्रेमचंद लिखते हैं, "भौर के वक्त सूर्य देवता के आगमन की तैयारियां हो रही थी, रम्भा आटा पीस रही थी। उस सन्नाटे में चक्की की घुमर-घुमर बहुत सुहानी मालूम होती थी, इससे सुर मिलाकर वह अपने दायरे में ढंग से गाती थी 'झुमनियाँ मोरी पानी में गिरी '3 , स्वच्छंद वातावरण में एक अलग ही भाव उत्पन्न करता है।

दोपहर का समय किसानों की लिए आराम का होता है। इस समय वह अपने कृषि कार्यों से अवकाश पाकर मोटी-मोटी रोटियाँ खाकर अपने घर लौटकर वृक्षों की छाया में आराम करते है और कभी-कभी इसी समय विनोद भी करते हैं। इस प्रकार जो शक्ति खो गई है उसे वे पुनः जुटाते हैं। उदाहरण के लिए , "दोपहर हो गई है किसान लोग खेतों में चले आ रहे है उन्हें विनोद का अच्छा अवसर मिला महादेव को चिढ़ाने में सभी को मजा आता था। किसी ने कंकड़ फैका , किसी ने तालियां बजाई तो तोता उड़ गया और वहां से दूर आम के एक पेड़ की डाली पर जा बैठा।"4 उसी तरह गाँव में ठंड की रात शहरों से अलग होती है। इसी बात को पूस की रात कहानी में प्रेमचंद लिखते हैं, "रात ने शीत की हवा को धधकाना शुरू किया। हल्कू उठ बैठा और दोनों घुटनों को छाती से मिलाकर सिर में उसमें छिपा लिया, फिर भी ठण्ड कम नहीं हुई .... उसने झुककर आकाश की और देखा अभी रात और कितनी बाकी है। सप्तऋषि अभी आकाश में आये भी नहीं सबेरा होने में अभी समय है।"5 रात को लोग चौपाल पर बैठकर वार्तालाप करते हैं। यह सार्वजनिक स्थल होता है। ग्रामीण विशेष अवसरों पर यहाँ एकत्रित होते हैं। नाटक, नौटंकी, रामलीला भी इन्हीं स्थानों पर होती है। अधिकारी के आने पर उसी स्थान पर अधिकारी को ठहराया जाता था। द्रष्टव्य है , "गाँव के सब आदमी जमा कर दिये गये मगर बलराज का कही पता न था .... दरोगाजी बिगड़कर बोले मनोहर तेरा बेटा कहाँ है। सारे फसाद की जड़ तो वही है , तूने उसे कहीं भगा तो नहीं दिया! उसे जल्दी हाजिर कर नहीं तो वारंट जारी कर दूँगा।"6

गाँवों की अपनी एक प्राकृति सौन्दर्य की अनुपम छटा होती है। ग्राम प्रकृति के अधिक निकट होते हैं, उनका जीवन भी इस वातावरण से प्रभावित होने के कारण अधिक प्राकृतिक होता है , शिकार कहानी की नायिका वसुधा जब गाँव पहुँचती है , तो देखती है, "बाहर हरा भरा बाग था जिसके रंग बिरंगे फूल यहाँ से साफ नज़र आ रहे थे और पीछे एक वि शाल मंदिर आका श में अपना सुनहला मस्तक उठाये , सूर्य से आँख मिला रहा था। स्त्रियां रंग बिरंगे वस्त्राभूषण पहने पूजा करने आ रही थी। मंदिर के दाहिने तरफ तालाब में कमल प्रभात के सुनहले आनंद से मुस्करा रहे थे।"7

इस नैसर्गिक सौन्दर्य के चलते वहाँ स्वच्छता का भी अभाव पाया जाता है। इसका वर्णन प्रेमचंद 'उपदेश' कहानी में करते हुए कहते हैं, ''छोटा सा गाँव था पर सफाई का कहीं नाम ना था , चारों और दुर्गन्ध उठ रही थी। किसी के दरवाजे गोबर सड़ रहा था- दुर्गन्ध से दम घुटता था।"8

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्राकृतिक वातावरण के साथ-साथ यदि सामाजिक वातावरण की बात करते हैं तो शोषित वर्ग में कृषक समाज एवं दरिद्र जनता दोनों का समावेश है। ग्रामीण समाज अपने धर्म और पूर्व जन्म के संस्कारों में विश्वास करता है। अशिक्षा के कारण उनके ऊपर अत्याचार किया जाता है , जिसे वे जानते हुए भी स्वीकार कर लेते हैं। जैसे- सवा सेर गेहूँ में जो व्यवहार शंकर के साथ होता है। उस विषय में प्रेमचंद लिखते हैं, "हम पढ़े लिखे होते तो कह देते, अच्छी बात है, ईश्वर के घर ही देंगे।

वहाँ की तौल यहाँ से कुछ बड़ी ना होगी। किन्तु शंकर इतना तार्किक, व्यवहार चतुर ना था। एक ऋण दूसरा ब्राह्मण का यदि कहीं ऋण बाकी रह गया तो सीधे नर्क ही जाउगाँ। यह सोचकर वह कांप जाता है और कहता है- महाराज तुम्हारा जितना होगा यही दूंगा। ईश्वर के यहाँ क्यों दूं ? इस जन्म में तो ठोकर खा ही रहा हूँ। उस जन्म के लिए क्यों कांटे बोऊ।"9

प्रेमचंद ने संयुक्त परिवार के पारस्पिरिक सहयोग एवं सहायता की भावना पर बल दिया है। 'गृहदाह' में पारिवारिक द्वेष के कारण लाला देव प्रकाश के सम्पूर्ण परिवार के विना श की कथा कही गई है। 'कप्तान साहब' में माता-पिता के प्रति पुत्र का कर्तव्य और श्रद्धा दिखाई गई है। प्रेमचंद प्रधान ग्रामीण जीवन के कुशल चितेरे हैं। उनका जन्म गांव में हुआ था। वहीं वे पले बढ़े और पढे-लिखे। उनका दृढ़ विश्वास था दे श की सच्ची उन्नति तभी हो सकेगी जब यहाँ के ग्रामीण जीवन को उन्नत बनाया जाए। वे इसी विश्वास को लेकर साहित्य क्षेत्र में उतरे थे। इस संबंध में गांधीजी ने कहा था , "यथार्थ भारत वर्ष गांवों में है और प्रेमचंद भारतीय गांवों की अकेली वाणी है।"10

प्रेमचंद ने समाज की कुछ प्रमुख समस्याओं पर भी कहानियाँ लिखी हैं। वैवाहिक समस्या के बारे में 'विस्मृति' कहानी में उनकी बहन का विवाह कही नहीं हो पाता है, फिर वह निर्णय लेते है कि, जहाँ से बहू घर में आएगी वहीं इसका भी विवाह कर देंगे। परंतु फिर भी समस्या समाप्त नहीं होती है। "उद्धार' का हजारीलाल स्वयं क्षय रोग से पीड़ित है। इस कारण विवाह नहीं करना चाहता , परंतु जब उसे विवाह के लिए बाध्य किया जाता है तो वह आत्महत्या कर नायिका का जीवन नष्ट होने से बचा लेता है।

'विद्रोह' कहानी मे दहेज की बुराईयों पर प्रका श डाला गया है। दूसरी समाज की समस्या विध वा समस्या के बारे में प्रेमचंद 'प्रेम की होली ' की नायिका चौदह वर्ष में विधवा हो जाती है। चंचलता और कि शोरावस्था होने पर भी उसकी आत्मा सामाजिक बन्धनों के कारण तड़पती रहती है। इसी आधार पर 'आधार' धिक्कार, नैराश्य, लीला, स्वामिनी, त्यागी का प्रेम , सुभागी कहानियों के विषय है जिसमें विधवा विवाह की समस्या से संबंधित है। प्रेमचंद ने समाज में जैसी अछूत समस्या पर भी कहानियाँ लिखी है जिसमें सबसे प्रमुख है 'ठाकुर का कुआँ' में अछूतों को उच्चवर्ग के लोगों के कुएँ से पानी भरने की अनुमति नहीं थी। समाज में शोषण कितना अधिक है इस बात को लेकर 'नशा' कहानी में जमींदार और निर्धन दोनों के जीवन का तुलनात्मक अध्ययन है। 'खुदाई फौजदार ' में दिखाया गया है कि निर्धनों पर विभिन्न प्रकार के शोषण होते थे। 'सवा सैर गेहूँ ' का किसान शंकर एक साधु के सत्कार के लिए अपने गाँव के एक ब्राह्मण से सवा सैर गेहूँ उधार लेता है। जिसे ब्याज-दर ब्याज वसूला जाता है, परंतु वह जीवन भर ऋण नहीं चुका पाता। उसका बेटा भी

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उसके ऋण को उतारने के लिए बंधुआ मजदूर बन जाता है।"11

घूसखोरी की समस्या पर आधारित 'नमक का दरोगा' कहानी बहुत प्रसिद्ध है। 'मुक्तिधन' कहानी में महाजन लाला दाऊ दलाल कर्ज और सूद की अनोखी तरकीबों से निर्धनों का लूटता है। 'बलिदान' कहानी में खेत के लगान की समस्या का वर्णन है। इसमें ओंकारनाथ जमींदार है। 'पूस की रात' में प्रेमचंद ने मनुष्य के आर्थिक शोषण के विरूद्ध एक बुलन्द स्वर उठाया है।

प्रेमचंद की ग्राम संबंधी कहानियों के विषय में आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी लिखते है , "प्रेमचंद की ग्रामीण संबंधी कहानियों की कला वस्तु-चित्रण और भाव चित्रण की दृष्टि से कई स्तरों की है। 'अलग्योझा' आवश्यकता से अधिक लम्बी है, परंतु ये उतार-चढ़ाव लम्बे समय के अन्तर्गत घटित होते हैं, इसलिए उनमें वह प्रभाव शीलता नहीं है, जो ''बड़े घर की बेटी' में पन्ना का रग्घु से चिढ़ना, रग्घु का पन्ना व अन्य के लड़कों से मिलकर रहना मुलिया की पन्ना अन्यमनस्कता किन्तु पन्ना के लड़के केदार का मुलिया के प्रति उत्कृष्ट होना और अन्त में विवाह कर लेना वस्तु वैषम्य का अच्छा उदाहरण है। फिर भी कहानी श्रेष्ठतम की श्रेणी में नहीं बन पाई उसकी दीर्घता के कारण। "बलिदान' में हरखू की गरीबी और उसके लड़के गिरधारी की लाचारी का चित्रण है। शंखनाद में वर्णन कौशल अच्छा है।"12

## निष्कर्ष

निष्कर्ष यह है कि प्रेमचंद ने भारतीय किसान के जीवन के द्वन्द्व कृषक और जमींदार का संघर्ष, नवीन और पुरातन का युद्ध, लगान वसूली में की जाने वाली पटवारी , सरपंच, तहसीलदार द्वारा ग्रामीणों का शोषण, महाजनों का कुचक्र आदि का वर्णन मार्मिकता से स्पष्ट किया गया है। उन पर जो अन्याय और उत्पीड़न होता है , निरीह, अषिक्षित और अंधविष्वास का प्रभाव ग्रामीण जनता पर पड़ता है। भारतीय ग्रामीण जीवन भी भारतीय संस्कृति का एक हिस्सा है। "इस जीवन की सकारात्मकता लेकर युवा पीढ़ी को कर्मठता की तरफ मोड़ा जा सकता है तथा स्थान विशेष की लोक संस्कृति का संरक्षण भी किया जा सकता है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य प्रेमचंद की कहानियों के माध्यम से ग्रामीण संस्कृति , लोक व्यवहार, लोक भाषा, और लोक संगीत आदि को ग्रामीण समाज के सन्दर्भ में उजागर किया गया है।

## सन्दर्भ ग्रंथ

*1. के.पी. पोथन एवं वी.सी. टोंग्या- समा जशास्त्र का परिचय, पृष्ठ 160।*
*2. ग्रामीण समाजशास्त्र, श्री गुप्ता एवं शर्मा पृष्ठ17*
*3. आत्माराम- मानसरोवर भाग 7, पृष्ठ.137।*
*4 प्रेमचंद- कायाकल्प, पृष्ठ.137।*
*5. पूस की रात, मानसरोवर भाग 1, प्रेमचंद, पृष्ठ.157।*
*6. उद्देश्य मानसरोवर, भाग 8, पृष्ठ285*
*7 शिकार मानसरोवर भाग 1, पृष्ठ.241।*
*8 उपदेश, मानसरोवर भाग 1, पृष्ठ286।*
*9 सवा सेर गेहूँ, राधेश्याम गुप्त, पृष्ठ.59।*
*10 प्रेमचंद, विश्वनाथ तिवारी, पृष्ठ.89,90*
*11 डॉ. इन्द्र मोहन सिन्हा , प्रेमचंद युगीन भारतीय समाज, पृष्ठ.140*
*12 प्रेमचंद, साहित्यिक विवेचना , नन्ददुलारे वाजपेयी, पृष्ठ 178*